[Conference-Composition of Colours :December,2014] ISSN- 2350-0530
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v2.i3SE.2014.3674

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

अजन्ता के चित्र एवं रंग संयोजन (गुप्तकालीन कला के परिप्रेक्ष्य में)

प्रो. श्रद्धा दुबे प्राध्यापक, इतिहास
शा. महारानी लक्ष्मीबाई स्नातकोत्तर कन्या महा.,किला भवन, इन्दौर

गुप्तकाल भारत के इतिहास का स्वर्ण–युग कहा जाता है। सुख समृद्धि और वैभव के इस काल में सभी कलाओं का समान रूप से उन्नयन हुआ। इस युग की सबसे बड़ी देन है अजंता के भित्तिचित्र। चित्रकारों ने गहन अधंकरामयी गुफाओं में बैठकर जिन अपार्थिव कृत्तियों का सृजन किया वे अप्रतिम है। इनमें कथावस्तु और विषय तो भगवान तथागत के जीवन और जातक कथाओं से ही लिए किन्तु उन्हें किसी सीमा में बांध कर नहीं रखा। उनमें सैकड़ों वर्षों का लोकजीव दर्पण की भाँति प्रतिबिम्बित है।अजंता में अर्ध–चन्द्राकार पर्वत को काटकर 29 गुफाएँ बनाई गई है। यह समूहों में बंटी हुई है। इनमें दसवीं और नवीं गुफाएँ बीच के समूह में है।

अजंता की गुफाओं के अधिकांष चित्र मिट चुके हैं परन्तु जो शेष है वे अद्भुत हैं। सबसे पुराने चित्रों पर शुंग कला का प्रभाव है। नवीं गुफा के एक दृश्य में जो मिट सा गया है भगवान तथागत बैठे हैं, राजा रानी अमात्यगण और उपासक भिक्षु उन्हें घेरे हुए हैं। अमात्यों के सिरों पर लटूदार पगड़ियाँ है और वे हाथों और गले में भारी–भारी आभूषण पहने हैं। आकृतियों से वे दक्षिण की ही किसी आदिम जाति के लोग लगते हैं। इसे हम अजंता चित्रकला की पूर्व परम्परा कह सकते हैं। इसमें धूसरित रंग का प्रयोग अधिक है किन्तु प्राकृतिक रंगों के प्रयोग की वजह से प्रत्येक वस्तु ऊपर वर्णानुसार स्पष्ट नजर आती है। चटख रंग न होने की वजह से यह कथानक को गंभीरता से प्रकट करते हैं और उसके आध्यात्मिक स्वरूप को गति प्रदान करते हैं।

रंगों का संयोजन ऐसा है जो भावव्यंजना को अभिव्यक्त करता है। यह अधिक प्राचीन होने की वजह से गेरू, रामरज, स्याही व चूने का प्रयोग किया गया है।पहली गुफा में शिवि जातक, षंखपाल जातक, महाजनक जातक, व चाम्पेय जातक आदि अंकित किये गये है। इनके अतिरिक्त बोधिसत्व, पद्मपणि, अवलोकितेश्वर और वज्रपाणि के भी विशाल भित्ति चित्र हैं। इनमें बोधिसत्व पद्मपाणि का चित्र भारतीय कला की एक अत्यंत उत्कृष्ट कृति माना जाता है। एक स्थान पर बुद्ध की तपश्चर्या का दृष्य है। इनकी विशेषता विषय नहीं है वरन् रंग संयोजन है। इसी गुफा में शिवि जातक तीन दृश्यों में चित्रित है। इसके बाईं ओर के कोने में राजभवन के अंतःपुर का दृश्य है। श्यामवर्ण का द्वारपाल काले और सफेद चारखाने का लम्बा, अंगरखा पहने द्वार पर खड़ा है। उसकी कमर में पट्टा बँधा है, भीतर दो स्त्रियाँ जो रत्नों के अलंकार, रेशमी झीने वस्त्रों और गौर वर्ण से राजमहिषियां प्रतित होती हैं, अत्यंत दुःखपूर्ण मुद्रा में खड़ी हैं। रंगों द्वारा इस दृष्य को अत्यन्त प्रभावी बनाया गया है यहां तक कि नेत्रों से झलकने वाली व्यथा भी सहज प्रकट है।

सत्रहवीं गुफा में भगवान बुद्ध के गुहा गमन का दृष्य है जिसमें वे राहुल जननी के भवन के द्वारा पर खड़े हैं। इस चित्र में राहुल और यशोधरा के अपेक्षा भगवान बुद्ध को बड़ा दिखाया गया है।

पहिली गुफा का समय सातवीं शताब्दी माना जाता है। इसमें एक ऐसा दृश्य भी है, जिसमें फारस के लोग दिखाये गये है। ईरान का एक राजा मदिरा पान कर रहा है। उसके सिर पर बड़े–बड़े बाल है जिन्हें वह लम्बे टोप से ढँके हुए है। मुंह पर दाढ़ी भी है। उसके आसन के नीचे दो दाढ़ी वाले सेवक गोल टोपियाँ अथवा टोप लगाये बैठे है। राजा के निकट ही उसकी रानी बैठी है। दो सेविकाएं मदिरा की सुरहियाँ लिए दोनों ओर खड़ी है। स्त्रियों के सिर पर भी टोप है। वे लम्बी फ्राक जैसा वस्त्र पहने है, जो नीचे लटकता है। इसका रंग संयोजन भी देखते बनता है।

अंजता के इन चित्रों में रंगों की शोभा दिव्य है। अजंता के रंग प्राकृतिक हैं। सूर्य के सात रंगों से प्रेरित ये रंग न प्राकृतिक है वरन् प्रकृति के अन्य संगो से प्रेरित है। रामरज गेरू, स्याही, चूना, फूलों व पत्तियों से बनाये गये रंग आज तक भी उसी वैभव के साथ है। जितना स्वाभाविक स्वरूप अजंता की चित्रकला में है उतना अन्यत्र नहीं। यह संयोजन का ही श्रेय है कि अजंता के नाग, यक्ष, गन्धर्व, विद्याधर, किन्नर, राक्षस और देवगण आदि सब दृष्टि पड़ते ही अभिव्यक्त हो सकते है। इनमें से किसे किस रंग से आंका जाए यह भी शास्त्रीय है। विशेषतः विष्णु धर्मोत्तरम् में बता दिया गया है। देवताओं का रंग उज्जवल और गौर होता है। उसमें चमक रहती है। नागराज वासुकि युग में नाग का वर्ण श्वेत अंकित होता है। दैत्य – दानव, राक्षस, गुहयक और पिशाच का रंग पानी के रंग जैसा होता है किन्तु निश्रभ रहता है। मनुष्यों में उत्तरापण के निवासियों का रंग गोरा और दक्षिणा पथ के लोगों का रंग श्याम आंकना चाहिये।

अजंता के चित्रों में मनुष्यों, देवगण, राक्षस, गंधर्व व यक्ष आदि की विभिन्न रंगों में अंकित देखकर अस्वाभाविकता लगती हो किन्तु यह समस्त शिल्पशास्त्र के नियमों पर आधारित है। अतः गुप्तकाल की इस गुहा–चित्रों का सम्पूर्ण चित्रकला जगत में अलग स्थान है। यह विश्वधरोहर में गिनी जाती है।